E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार के द्वितीय अंक का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

द्वितीय अङ्क युद्ध की घटनाओं से परिपूर्ण है। युद्ध में अभिमन्यु के मारे जाने से दुर्योधन बहुत प्रसन्न होकर भानुमती से मिलने के लिए आता है। इधर भानुमती अपने गत रात्रि के स्वप्न से व्याकुल है। स्वप्न था कि किसी नकुल ने सौ साँपों को मार डाला है । (इसके द्वारा नाटककार ने भावी घटना की सूचना दी है कि दुर्योधन सौ भाइयों समेत मारा जाएगा)। इस स्वप्न की चर्चा वह अपनी सखियों से करती है और वहीं छिपकर खड़ा दुर्योधन सब कुछ सुन लेता है। जब भानुमती सूर्य के लिए अर्घ्य अर्पित करना चाहती है तो दुर्योधन छिपे-छिपे आकर उसके हाथ में पुष्प देते हुए क्रीड़ा करता है। दुर्योधन के हाथ से फूल गिर पड़ते हैं। भानुमती आशंकित है। दुर्योधन कहता है कि ऐसी श्रेष्ठ सेना और सेनापति पर तुम्हारी आशंका व्यर्थ है। दुर्योधन उसके साथ विहार करना चाहता है।

उसी समय जोरों का तूफान आने पर वह दारुपर्वत प्रासाद में भानुमती के साथ चला जाता है। तभी 'तोड़ दी तोड़ दी' इस प्रकार चिल्लाता हुआ कंचुकी वहाँ आता है। दुर्योधन के बहुत पूछने पर आँधी द्वारा उसके विजय रथ की पताका को तोड़ने की बात वह कहता है। (यहाँ भी नाटकार ने भावी घटना-दुर्योधन की जाँघ के तोड़े जाने की सूचना दी है)।

इसी समय आर्तनाद करती हुई जयद्रथ की माता और उसकी पत्नी दुःशला (दुर्योधन की बहन) दुर्योधन के सामने आकर कहती है- 'महाराज! गाण्डीवधारी अर्जुन ने पुत्रवियोग से उद्विग्न होकर आज सूर्यास्त से पहले महारथी जयद्रथ को मारने की अटल प्रतिज्ञा की है। उसे बचाइये'। यह समाचार सुनकर दुर्योधन उन दोनों को सान्त्वना देकर रणस्थल की ओर प्रस्थान कर देता है।